"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 08, Issue: 01, Jan. – Feb. 2021 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

"हिंदी साहित्य पर स्त्री विमर्श का प्रभाव"

सुदेशना महादेव हिरवे

एम.ए., बी.एड. (हिंदी)

बीड, महाराष्ट्र, भारत

हिंदी स्त्री विमर्श :

भारत एक सुसंकृत राष्ट्र है । प्रेरक शक्ति के रूप में नारी सदैव नैपथ्य में रही है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में न केवल भारत एवम् अंतरराष्ट्रीय तथा कथित आज स्त्री विश्वरंगमंच पर अवतीर्ण हुई है। अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष इसका प्रमाण माना जाता है । बीसवीं शताब्दी का नारी को दिया गया यह अधिकार सर्वाधिक अमूल्य एवम् अविस्मरणीय है ।

हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्यांए देखने को मिलती है । हिंदी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा जी की श्रृंखला की कडिया नारी सशक्तीकरण का सुंदर उदाहरण हैं ।

आज महिला लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य में चित्रित महिला लेखन के जीवन को विविध पहलुओं कों उजागर किया है |स्त्री विमर्श की सुरूवाती गुंज पश्चिम में देखने को मिली | इ.सं.१९६० कें आस-पास नारी सशक्तीकरण में कुच नाम चर्चित है | उषा प्रियंवदा, कृष्ण सोबती, मन्नु भंडारी एवं शिवानी आदी लेखिकाओं ने नारी मन की अंत-द्वंद एवं आप बीती घटनाओको उकेरना सुरु किया और आज स्त्री विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा है |

'शैला एल क्रोचर' ने कहां हैं, की वैश्विकरण का शाब्दिक अर्थस्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं कें विश्वस्तर पर रूपांतरन की प्रक्रिया है | वैश्विकरण शब्द अंग्रेजी कें ग्लोबलायझेशन का हिंदी रूपांतरण है | ग्लोबलायझेशन कें लिए हिंदी में भूमंडलीकरण शब्द का प्रयोग किया जाता है |

आज वैश्विकरण के कारण विश्व मनुष्य आर्थिक सबलीकरण चाह रहा हैं, न की सभी संस्कृतियों कें मुल्यों कों प्राप्त करने का प्रयास कर रहां हैं और न ही उसमें समर सता लाने का प्रयास वस्तुतः सभी महान संस्कृतियों कें मुलभूत तत्वं समान ही हैं । आज वैश्विकरण के कुछ लाभ ही है, आज ज्ञान विज्ञान तकनीकी सूचना संचार आदी में अभूतपूर्व प्रगती का लाभ पुरा विश्व उठा रहा हैं ।

हिंदी साहित्य में नये लेखाको कें साथ लेखीकाऐ भी उभरकर सामने आयी है | जिन्होंने हिंदी साहित्य को बहुमुल्य योगदान दिया हैं, जिसमें प्रमुख हैं, कृष्ण सोबती, ममता कलिया, नासिरा शर्मा, मधु कांकरिया, अलका सरावगी, प्रभा खेतान, चंद्कांता, मन्नु भंडारी, उषा प्रियवंदा, चित्रा मुद्गल, मृणाल पांडेय, मृदुला गर्ग आदि लेखिकाओ ने सभी समस्याओं कों वाणी देने का काम यह महिला लेखिकओ ने किया हैं ।

भारतीय जीवन मे शुरु से अब तक नारी के प्रति द्रुष्टी का सच्चा लेखा - जोखा उपन्यास कहानी या कविता में मिलता हैं । इक्कीसवी सदी के महिला कथाकारों के सहित्य पर वैश्विकरण का प्रभाव दिखाई देता हैं । इन महिला कथाकारों ने अपने साहित्य कें कथाओ में आतंकवाद विस्थापित किऐ हुये लोगो की समस्यां, बदलते रिश्ते, स्त्री की समस्यां आदि विषयो पर अपने विचारों को अभिव्यक्त किया हैं ।

महिला कथाकारों ने विषय के अनुरूप अपने कथाओं का विस्तार किया है । उपन्यास में हर पहलू पर विचार किया है । कथानक को रोचक बनाने के लिए संदर्भ घटना प्रसंगों का प्रयोग किया गया है। इतिहास, समाज, परंपरा, धार्मिक रीति-रिवाज, भारतीय संस्कृति के मूल्यों संदर्भ को अपनी समझ और अर्थ को प्राय: इन कहानियों में लिखा है । इन कहानियों में बदल रहे सामाजिक वातावरण, सांस्कृतिक परिदृश्य के संदर्भ में स्त्री की भूमिका और उस के बदलते तेवर स्पष्ट दिखाई देते हैं। ।

वैश्वीकरण ने हमारे सामने कुछ चुनौतियां खड़ी की है तो कुछ लाभ भी पहुंचाए हैं। इस लाभ और चुनौतियों को हमारे हिंदी साहित्य में बराबर चित्रित किया है । सामाजिक परिवारिक जीवन के व्यावहारिक चित्रण के लिए विशेष प्रसिद्ध सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'बिखरे मोती' और 'उन्मदिनी' नामक कहानी संग्रह में भारतीय नारी की परिस्थितियों, समस्याओं तथा भावनाओं का सहज चित्रण किया है ।

वैश्वीकरण के कारण आज नगर –

महानगर सामान्य जनता का आकर्षण केंद्र बन गया है । वैश्वीकरण से प्रभावित होकर 21 वीं सदी की महिला कथाकारों ने अनेका - अनेक पहलुओं को अपने कथा साहित्य के माध्यम से हमारे सामने रखने का प्रयास किया है । वैश्वीकरण के कारण सहज रुप से साधनो की उपलब्धता ने हमारे अंदर प्रादेशिकता, आतंकवाद, विस्थापन भोगवृत्ति, भौतिक लित्सा को भड़काया है । कम समय में बगैर परिक्रम किए बिना ज्यादा पाने की भावना को बढ़ावा दिया है ।

कथा लेखिका चंद्रकांता द्वारा कश्मीर जनजीवन पर लिखित उपन्यास है । भारत का स्वर्ग कहीं जाने वाली कश्मीर रुपी धरती लहू-लुहान जिंदगी जीने का बाध्य है । उपन्यास में आम आदमी कें सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक परिस्थितीयो में जो बदलाव वैश्वीकरण का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है |

प्राचीन भारत से लेकर आज तक स्त्री विमर्श किसी न किसी रूप में विचारणीय विषय रहा है । आज से लगभग सव्वा सौ साल पहले का श्रद्धाराम फिल्लौरी का उपन्यास 'भाग्यवती' से लेकर आज तक स्त्री विमर्श ने आगे कदम बढ़ाया ही है, छलांग भले ही न लगाई हो लेकिन अलग-अलग पैमानों पर ही सही प्रगति हुई है ।

संक्षेप में क्रम कह सकते है की वैश्वीकरण के कारण निर्मित प्रभावित समाज जीवन को 21 वी सदी के महिला कथाकारोनें ईमानदारी के साथ व्यक्त किया हैं ।

भारत वर्ष में मानव चिंतन ही रहा है । उसका निर्माण, विकास, दिशानिर्देश आदि विभिन्न बातो मे मनुष्य की चर्चा हुई । इसमे असमानता का भी प्रादुर्भाव हुआ इस प्रकार समाज में ही स्थिती विषम हो गई । नारी के प्रती पुरा दृष्टिकोन एक समय नकारात्मक हो गया पुरे समाज मे चिंतन दिखने लगा यहा तक की विभिन्न सभ्यताओं मे नारी के प्रति दृष्टि विभिन्न हो गई । आगे चल कर इसी आधार पर नारी चिंतन भी भिन्न रुप लेकर सामने आता है । इस में सबसे बडा हात स्त्री के प्रति दृष्टिकोण का है भारतीय दृष्टी मे नारी एक मूल्य हैं ।

स्त्री अपने अधिकारो को पाने के लिए लड रही है, उसकी अनेक समस्याओं का निराकरण करने के लिए वैसेही चरित्रो का निर्माण इन महिला कथाकारों ने किया है | यह चरित्र वैश्वीकरण से प्रभावित दिखाई देते है |

कई लेखिकाओं ने नारी चेतना भावनाओं के सहारे जीवन जीने की अपेक्षा व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाए हुए हैं, उनका स्त्री विमर्श केवल विरोधी न होकर नारी को मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थर पर समान अधिकार की मांग करने वाला है । यह बात कई लेखिकाओं की आत्मकथा से स्पष्ट नजर आती है ।

प्रत्येक महिला लेखिकाओं ने साहित्य का निर्माण करते समय एक विशिष्ट उद्देश्य सामने रखकर ही साहित्य का निर्माण किया है । जीवन में उद्देश्य का होना बहुत महत्वपूर्ण है । कुछ महिला कथाकारों ने समाज में चल रही समस्या, रोजगार, बेकारी, आतंकवाद आदि समस्याओं का स्पष्ट चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में किया है ।

भारतवर्ष में मानव चिंतन ही रहा है । उसका निर्माण, विकास, दिशा- निर्देश आदि विभिन्न बातों में मनुष्य की चर्चा हुई । बाद में अनेक कारण आते गए और यह कालक्रम मैं उग्र भी हुआ । इनमें असमानता का भी प्रादुर्भाव हुआ । इस प्रकार समाज में स्थिति विषम हो गई नारी के प्रति पूरा दृष्टिकोण एक समय नकारात्मक हो गया, यहां तक की विभिन्न सभ्यताओ में भी नारी के प्रति दृष्टि विभिन्न हो गई आगे चलकर नारी चिंतन भिन्न रूप लेकर सामने आता रहा ।

निष्कर्ष :

आज के दौर में संस्कृति का भी बाजार गर्म हुआ है । महिला कथा साहित्य में चित्रित 21 वीं सदी में नारी की सामाजिक स्थिति यह है कि वह अपनी चाहत इच्छाओं के अनुरूप जी भी नहीं पा रही है ।

महिला लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य में चित्रित नारी जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया है । इन्ह लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य में नारी के सामाजिक दायित्व का निर्वाहन लेखिकाओं ने किया है । सभी महिला लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में घटित घटना के संदर्भ प्रस्तुत करके समाज जीवन की पोल खोलने का प्रभावी काम किया है ।

संदर्भ सूची

1. राजकिशोर स्त्री परंपरा और आधुनिकता – पृ. 167
2. मैत्रेई पुष्पा विजन
3. चंद्रकांता कथा सतीसर पृ. 395
4. चित्रा मुद्गल बयान भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली स. 2005
5. ममता कालिया दौड़ वाणी प्रकाशन नई दिल्ली स. 2000
6. जया जादवानी: ततवमसि वाणी प्रकाशन नई दिल्ली स. 2002